अप्रैल, 2022

Digital News Letter

पुनर्नवा

..bouncing back to life again and again....

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

आपदा प्रबंधन विभाग, बिहार सरकार

बिहार सरकार

तेज आंधी-तूफान से सुरक्षा के उपाय

गर्मी के मौसम में कमोबेश राज्य के सभी जिलों में तेज आंधी–तूफान आते हैं। इससे जन–धन एवं जीवन की क्षति होती है।

चक्रवाती तूफान-तेज आंधी से बचने के उपाय

1. जब तक आंधी–तूफान शांत न हो जाये, तब तक घर से बाहर न निकलें।
2. संचार माध्यमों से मौसम की जानकारी प्राप्त करते रहें।
3. पुराने व क्षतिग्रस्त भवनों और पेड़ों के नजदीक कदापि न जायें।
4. बिजली और टेलिफोन के खंभों के नीचे न खड़ें हों।
5. यदि वाहन से सफर कर रहे हैं तो सुरक्षित स्थान पर रूकें।

तेज आंधी-तूफान से बचाव हेतु ढालदार छत का निर्माण

1. तेज हवा के प्रभाव से बचने के लिए चारों तरफ ढलान वाली छत बनाना चाहिए।
2. वर्षा से दीवारों के सुरक्षा के हेतु चारों तरफ छत 18 ईंच तक लटका सकते हैं।
3. हवा के दबाव से छत के उपर उठने के प्रभाव को कम करने के लिए छत का ढाल 2:1 अनुपात में बनाएं।
4. छत के जीआई शीट को जे बोल्ट या पेंच के सहारे छत की कड़ी–पार्लिन–में जकड़ दें।

विषय सूची

क्र. सं.	विषय		पेज
1.	संपादकीय		4
2.	समुदाय को सशक्त किये बिना आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन संभव नहीं	अशोक कुमार शर्मा का आलेख	5
3.	वज्रपात से बचाव संबंधी कार्ययोजना के लिए औरंगाबाद में बैठक		9
4	पटना में प्रदूषण (जल, मिट्टी और ध्वनी): वर्तमान स्थिति के अध्ययन प्रतिवेदन पर कार्यशाला		10
5	सांस्कृतिक धरोहरों की सुरक्षा के लिए पांच दिवसीय प्रशिक्षण		11
6	Wetlands के संरक्षण लिए राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन		11
7	"सुरक्षित तैराकी" प्रशिक्षण कार्यक्रम		12
8	"सुरक्षित तैराकी" के लिए मास्टर ट्रेनर का प्रशिक्षण		13
9	"जिला स्तरीय सड़क सुरक्षा" कार्यक्रम		14
10	अग्नि सुरक्षा सप्ताह (14–20 अप्रैल, 2022)		14
11	सामुदायिक स्वयंसेवकों का प्रशिक्षण		15
12	पंचायत संसाधन केन्द्र के पदाधिकारियों का मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण		16
13	औद्योगिक इकाइयों में सुरक्षा के लिए समीक्षा बैठक		17
14	बिहार दिवस: बेहतर कार्य करने वाले संस्थाओं को किया गया सम्मानित		18
15	सोनपुर मेला, 2022 के आयोजन की पूर्व तैयारी बैठक		18
16	सड़क सुरक्षा के SOP के लिए प्रारूपण समिति की बैठक		19
17	मोटर पार्ट्स दुकानों में सड़क सुरक्षा संबंधी प्रचार सामग्री का वितरण		19
18	भूकम्परोधी निर्माण तकनीक का प्रशिक्षण		19
19	अस्पताल अग्नि सुरक्षा कार्यक्रम		21
20	**Mass Messaging**		22
21	खबरें तस्वीरों में		23–30

हम सब लोगों की मदद का करेंगे प्रयास

आपदा में फंसे लोगों को मिलेगी राहत की सांस

विकास ऐसा हो जो आफत से बचाए,
ऐसा न हो जो कि आफत बल जाए

संरक्षक मंडल

डॉ. उदय कान्त मिश्र, भा. अभि. से. (से.नि.)
उपाध्यक्ष, बि.रा.आ. प्र..प्राधिकरण

पी. एन. राय, भा. पु.से.(से.नि.)
सदस्य, बि.रा.आ. प्र..प्राधिकरण

मनीष कुमार वर्मा भा.प्र.से. (से.नि.)
सदस्य, बि.रा.आ. प्र..प्राधिकरण

मीनेन्द्र कुमार, बि.प्र.से.
सचिव, बि.रा.आ. प्र..प्राधिकरण

मुख्य संपादक: शशि भूषण तिवारी
उपाध्यक्ष के विशेष कार्य पदाधिकारी

वरीय संपादक: कुलभूषण कुमार गोपाल

संपादक मंडल

नीरज कुमार सिंह, सीनियर कंसल्टेंट
दिलीप कुमार, वरीय सलाहकार (मानव संसाधन एवं क्षमतावर्द्धन)
डॉ. जीवन कुमार, परियोजना पदाधिकरी
अशोक कुमार शर्मा, परियोजना पदाधिकारी
प्रवीण कुमार, परियोजना पदाधिकारी
जयंत रौशन, परियोजना पदाधिकारी
आई.टी: सुश्री सुम्बुल अफरोज
मनोज कुमार
ई-मेल: sr.editor@bsdma.org
वेबसाईट: www.bsdma.org
सोशल मिडिया : www.facebook.com/bsdma

नोट: पुनर्नवा में प्रकाशित आलेख लेखकों के व्यक्तिगत एवं अध्ययन स्वरूप विचार हैं। लेखन द्वारा व्यक्त विचारों के लिए बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण उत्तरदायी नहीं है।

आपदा नहीं हो भारी,
यदि पूरी हो तैयारी।

संपादकीय

आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए अप्रैल माह उपलब्धियों का माह साबित हुआ। इस माह आपदा जोखिम न्यूनीकारण के लिए कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम संपन्न हुऐ जिसमें एन.आई.डी.एम. के सहयोग से सांस्कृतिक धराहरों की रक्षा के लिए पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से राज्य के सांस्कृतिक धरोहरों की सुरक्षा पर विस्तार से चर्चा हुई। राज्य के सांस्कृतिक धरोहरों की पहचान और रक्षा के लिए यह आयोजन बड़ी उपलब्धि है इसी माह में राजधानी पटना में प्रदूषण की वर्तमान स्थिति पर अध्ययन के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में प्रदूषण को कम करने के लिए विशेषज्ञों द्वारा तैयार अंतिम प्रतिवेदन को स्वीकृत किया गया। आपदाओं से निपटने के लिए पंचायतों से आये सामुदायिक स्वयंसेवकों का प्रशिक्षण जारी रहा। इस प्रशिक्षण में पश्चिम चंपारण के 45 स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षित सभी स्वयंसेवक आपदा के वक्त अपने पंचायतों के लिए किसी दूत से कम नहीं होंगे। दूसरी ओर औरंगाबाद में वज्रपात से बचाव संबंधी कार्ययोजना को लागू करने के लिए महत्वपूर्ण बैठक हुई। इस प्राकृतिक आपदा से निपटने के लिए माननीय सदस्य श्री पी एन राय खुद औरंगाबाद गये और उच्चस्तरीय बैठक कर वज्रपात से बचाव के लिए अधिकारियों को दिशा–निर्देश दिये। भूकंपरोधी भवन निर्माण के लिए राजमिस्त्रयों और अभियंताओं को रिफ्रेशर कोर्स कराया गया। ये सभी राजमिस्त्री राज्य में भूकंपरोधी भवन निर्माण में अपना योगदान दे रहे हैं।

22 से 24 मार्च, 2022 तक अयोजित बिहार दिवस के सफल आयोजन के बाद प्राधिकरण द्वारा बेहतर कार्य करने वाले गीतकर, स्वयंसेवी संगठनों और कलाकारों को सम्मानित किया गया। आपदा से निपटने के लिए अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएं, जागरूकता कार्यक्रम समेत अन्य गतिविधि जारी रहा। खासकर डूबने से होने वाली मौत की रोकथाम के लिए सुरक्षित तैराकी कार्यक्रम, पंचायत संसाधन केंद्रों के अधिकारियों का प्रशिक्षण, रोड सेफ्टी के लिए सामग्री तैयार करने की बैठक समेत कई महत्वपूर्ण गतिविधियां आयोजित हुए। प्राधिकरण द्वारा संचालित इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों से आपदाओं की रोकथाम एवं क्षति को कम करने में सफलता अवश्य मिलेगी।

शशि भूषण तिवारी
(मुख्य संपादक)

समुदाय को सशक्त किये बिना आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन संभव नहीं

अशोक कुमार शर्मा, परियोजना पदाधिकारी

आपदाओं का मुकाबला के लिए समुदाय को सशक्त करना अतिआवश्यक है। स्थानीय जनसंख्या की सामर्थ और क्षमता की लामबंदी भी आपदा रोकने के लिए आवश्यक है। हम जानते हैं कि किसी भी आपदा में स्थानीय समुदाय को आपदाओं के पहले और बाद में सक्रिय भूमिका निभानी पड़ती है, क्योंकि :

- आपदा के घटित होने से पहले अच्छी तैयारी उसके प्रभाव को कम करेगा।
- आपदा के घटित होने से पहले कुछ घंटों में, कहीं और से मदद आने से पहले अधिक संख्या में जीवन को बचाया जा सकता है।
- आपदा के फलस्वरूप स्वास्थ्य की अनेक समस्याओं को अधिक प्रभावी रूप से दूर किया जा सकता है, यदि समुदाय सक्रिय और सुसंगठित हों।

समुदाय तथा संवेदनशीलता (Community and Vulnerability)

समुदाय शब्द को एक जटिल शब्द माना जाता है जिसकी एक समरूप स्वीकार्यता होना चाहिए। सामान्य शब्दों में यह लोगों का ऐसा समूह है जिसके समान विचार, संसाधन, परिवेश, अपेक्षाएं आदि होते हैं। आपदा से बचाव की तैयारी के दृष्टिकोण से निम्नलिखित तथ्य आवश्यक हो सकते हैं:–

एक प्रादेशिक क्षेत्र (Territorial Area) के भीतर संगठनों का समूह तथा सबसे अधिक एक "अपनेपन" की भावना हो सकती है। फिर भी समुदाय की सबसे तर्कसंगत परिभाषा विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा दी की गई है जिसमें समुदाय को "एक आमने–सामने संपर्क वाले समूह के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसमें हितों तथा महत्वाकांक्षाओं का सामंजस्य होता है तथा जो समान मूल्यों तथा उद्देश्यों से संबद्ध रहता है"।

प्रश्न यह है कि आपदाओं के मामले में कौन सबसे अधिक संवेदनशील होता है। आर्थिक संदर्भ में कोई स्पष्ट उत्तर नहीं होता है। यह आवश्यक नहीं है कि सभी गरीब, आपदाओं द्वारा समान स्तर पर प्रभावित हों अथवा किसी क्षेत्र में रहने वाले सभी लोग समान स्तर पर आपदा जोखिम को झेलें। लेकिन, सामान्य रूप से यह लोगों के हितों से वंचित अथवा हाशिए पर स्थित समुदाय अथवा समूह हैं जो आपदाओं से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। इनके पास आपदाओं के प्रभाव से उबरने के लिए सबसे कम संसाधन तथा क्षमताएं होती हैं तथा ये अनेक खतरों के लिए संवेदनशील बन जाते हैं।

इस प्रक्रिया में कुछ कारण हो सकते हैं :

- संसाधनों तक पहुंच की कमी (पदार्थ/आर्थिक संवेदनशीलता)
- सामाजिक पैटर्नों और प्रतिमानों का विघटन (सामाजिक संवेदनशीलता)
- पर्यावरण का निम्नीकरण तथा उसे सुरक्षित रखने की असमर्थता (पारिस्थितिक संवेदनशीलता)
- सुदृढ़ राष्ट्रीय तथा स्थानीय संस्थागत संरचनाओं की कमी (संगठनात्मक संवेदनशीलता)
- सूचना तथा ज्ञान तक पहुंच की कमी (शैक्षिक संवेदनशीलता)
- जन जागरूकता की कमी (सोंच तथा प्रेरणा संबंधी संवेदनशीलता)

- राजनीतिक शक्ति तथा प्रदर्शन तक सीमित पहुंच (राजनीतिक संवेदनशीलता)
- कुछ मान्यताएं तथा रीतियां (सांस्कृतिक संवेदनशीलता)
- कमजोर इमारतें अथवा कमजोर व्यक्ति (भौतिक संवेदनशीलता) (आइसन, 1993)।

अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रों के परिवार ही होते हैं जो बाढ़, भूकंप, अतिवृष्टि, ओलावृष्टि, चक्रवाती तूफान, वज्रपात, आदि जैसी कठिनाइयों के लिए प्रत्यक्ष रूप से संवेदनशील होते हैं। हमारा दृष्टिकोण शुरू से ही आपदा के घटित होने पर राहत के लिए धन/अनुदान की मांग करने की बजाय समुदायों को विभिन्न साधनों जैसे जागरूकता, शिक्षा, प्रशिक्षण द्वारा परिवार स्तर पर उनकी क्षमताओं को सुदृढ़ किया जाना है।

प्रशिक्षण का महत्त्व

प्रशिक्षण, ग्रहणकर्ताओं में ज्ञान, कौशल तथा सोंच को बेहतर बनाने का प्रयास करता है। आपदाओं के प्रबंधन के संदर्भ में, प्रशिक्षण का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि यह विभिन्न श्रेणियों के कर्मियों को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल प्रदान करता है। यह विपत्ति का प्रबंधन करने वाले व्यक्तियों के प्रदर्शन को सुधारता है। यह उन्हें स्थितियों के अनुसार ज्ञान और कौशलों का उपयोग करने में समर्थ बनाता है। प्रशिक्षण व्यक्तियों, संगठनों तथा समुदायों की क्षमताओं को विकसित एवं सुदृढ़ करने में सहयोग करता है। प्रभावी प्रशिक्षण के लिए संस्थागत सहायता का होना आवश्यक है। सूचना, शिक्षा, संचार तथा प्रशिक्षण की गतिविधियाँ उचित आवश्यकता विश्लेषणों पर आधारित होनी चाहिए। इसे पूर्णतावादी होना चाहिए क्योंकि आपदा प्रबंधन गतिविधियों में अनेक प्रकार के कर्मी सम्मिलित होते हैं। इनमें नीति निर्धारक, सरकारी अधिकारी, विशेषज्ञ, तकनीकी विशेषज्ञ, युवा, गैर–सरकारी संगठन, समुदाय–आधारित संगठन, समुदाय आदि सम्मिलित हैं। इन कार्मिकों की प्रशिक्षण आवश्यकाताएं भिन्न–भिन्न होती हैं। उन्हीं के अनुसार, सूचना, शिक्षा, संचार तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों को विकसित किया जाता है।

समुदाय को प्रशिक्षण की आवश्यकता

बिहार, देश के सर्वाधिक आपदा प्रभावित राज्यों में से एक है। बाढ़, सूखा, भूकंप, ओलावृष्टि, चक्रवाती तूफान, नाव दुर्घटना, वज्रपात, नदियों/तालाबों में डूबने की घटनाएं, अग्निकांड, शीतलहर, लू, सड़क दुर्घटना, असमय भारी वर्षा आदि आपदाओं से यह राज्य समय–समय पर प्रभावित होता रहा है। प्राकृतिक आपदाओं में बाढ़ सबसे ज्यादा और हर साल आने वाली आपदा है जिससे जान–माल की अपार क्षति होती है। यह सर्वविदित है कि किसी भी आपदा के घटित होने पर समुदाय ही प्रथम रिस्पांडर होता है अतएव, आपदाओं की जोखिम की पहचान एवं न्यूनीकरण तथा प्रबंधन में समुदाय की महती भूमिका है। समुदाय को जागरुक एवं सक्षम बनाने का कार्य पंचायत प्रतिनिधियों के माध्यम से बेहतर तरीके से हो सकता है। इसी पृष्टभूमि में बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने मुखिया एवं सरपंच सहित सभी पंचायत प्रतिनिधियों (पंच, वार्ड सदस्य, पंचायत समिति के सदस्य एवं जिला परिषद् के सदस्य) को बहु–आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षित कर रहा है। चूँकि त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में जनता द्वारा चुने हुए पंचायत प्रतिनिधियों की समुदाय के बीच नेतृत्वकारी भूमिका होती है। अतः प्रशिक्षण का मूल उद्देश्य है कि पंचायत प्रतिनिधियों के माध्यम से जिलों के प्रखंडों में पंचायत स्तर तक जन समुदाय को बहु–आपदा के जोखिम न्यूनीकरण के संबंध में जानकारी उपलब्ध कराई जाए।

पंचायत प्रतिनिधियों के प्रशिक्षण का उद्देश्य

आपदा की प्रकृति स्थानीय होती है और इसके रिस्पांस हेतु समुदाय की सहभागिता अत्यन्त महत्वपूर्ण है। पंचायत प्रतिनिधि स्थानीय समुदाय के द्वारा ही निर्वाचित होते हैं और उनका स्थानीय समुदाय पर सीधा प्रभाव होता है। दैनंदिन कार्यों के लिए समुदाय अपने पंचायत प्रतिनिधियों के संपर्क में रहते हैं। जनप्रतिनिधि के साथ उनका संवाद सीधा और सुगम होता है। अतएव, पंचायत प्रतिनिधियों की आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में जागरूकता एवं क्षमतावृद्वि से स्थानीय समुदाय पर इसका सीधा प्रभाव पड़ेगा। आपदा रिस्पांस (बचाव एवं राहत) के कार्य में वे प्रभावी होंगे।

आपदा प्रभावित समुदाय की भेद्यता (Vulnerability) के विश्लेषण एवं उसके न्यूनीकरण के लिए ग्राम सभा एवं पंचायत प्रतिनिधियों का जागरूक होना आवश्यक है। आपदाओं के प्रति पंचायत प्रतिनिधियों के जागरूक होने से स्थानीय समुदाय अपने स्थानीय प्रकृति के आपदाओं के विश्लेषण और उसके न्यूनीकरण, बचाव एवं रिस्पांस की योजनाएं सटीक रूप से तैयार कर सकते हैं।

प्रशिक्षण प्रक्रिया

किसी भी आपदा के घटित होने पर समुदाय ही प्रथम रिस्पॉडर होता है। समुदाय को इस भूमिका के निर्वहन हेतु जागरुक एवं सक्षम बनाने का कार्य पंचायत प्रतिनिधियों के माध्यम से बेहतर तरीके से हो सकता है। इसी पृष्टभूमि में बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन विषय पर मुखिया एवं सरपंच सहित सभी पंचायत प्रतिनिधियों के बहु–आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन में प्रशिक्षित एवं जागरूक करने के उद्देश्य से दो दिवसीय प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि उनके माध्यम से गांव के लोग आपदाओं की रोकथाम, शमन एवं उनके कुप्रभावों से समुदाय के जान माल की क्षति को कम करने हेतु जागरुक एवं सक्षम बन सकें। प्रशिक्षण हेतु पंचायत प्रतिनिधियों के साथ कार्यशाला आयोजित कर उनके प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकता का आकलन के लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल/सामग्री विकसित की गयी है।

प्रथम चरण में जिलों के प्रखंडों से चयनित एक–एक मुखिया एवं सरपंच को राज्य स्तर पर उक्त मॉड्यूल एवं सामग्री के अनुसार दो दिवसीय मास्टर ट्रेनर का प्रशिक्षण दिया गया है। प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर के माध्यम से अपने प्रखंडों में पंचायत प्रतिनधियों (मुखिया, सरपंच, पंच, वार्ड सदस्य, पंचायत समिति एवं जिला परिषद के सदस्य इत्यादि) को प्रखंड स्तर पर एक दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया है। पंचायत प्रतिनिधियों के प्रशिक्षण के द्वारा ग्राम सभा/वार्ड सभा की बैठकें आयोजित कर समुदाय को आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन विषयक प्रशिक्षण देना जारी है।

दूसरे चरण में बिहार के सभी प्रखंडों के प्रमुख एवं जिला परिषद् अध्यक्ष का ''आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन'' विषय पर राज्य स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण के माध्यम से सभी प्रखंडों के प्रमुख एवं जिला परिषद् अध्यक्ष को बहु–आपदा के जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण और जानकारी उपलब्ध करायी गई है ताकि आपदाओं के जोखिम की पहचान कर उनका सामना करने के लिए उनका क्षमतावर्धन किया जा सके। चूँकि प्रखंड प्रमुख एवं जिला परिषद् अध्यक्ष नेतृत्वकारी भूमिका में होते हैं, अतएव इस प्रशिक्षण में उनके आपदा प्रबंधन संबंधी नेतृत्व क्षमता विकसित करने पर ध्यान दिया गया है।

इसी कड़ी में नवनिर्वाचित पंचायत प्रतिनिधियों को आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूक एवं प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से जिला पंचायत संसाधन केन्द्र के पदाधिकारियों को "आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन" विषय पर दो दिवसीय राज्यस्तरीय मास्टर ट्रेनर का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है कि इन प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर के माध्यम से पंचायती राज विभाग द्वारा आयोजित प्रखण्डस्तरीय प्रशिक्षण में जनप्रतिनिधियों को आपदा जोखिम न्यूनीकरण के विषय पर जागरूक करना ताकि आपदा के समय अपने पंचायत को वे सुरक्षित रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाएं

प्राकृतिक आपदाओं को दूर भगाएं

वज्रपात से बचाव संबंधी कार्ययोजना के लिए औरंगाबाद में बैठक

दिनांक 26.04.2022 को औरंगाबाद जिले के समाहरणालय सभाकक्ष में श्री पी.एन.राय, माननीय सदस्य की अध्यक्षता में वज्रपात से बचाव एवं रोकथाम की कार्ययोजना के क्रियान्वयन पर बैठक हुई। बैठक में जागरूकता कार्यक्रम एवं पूर्व चेतावनी संबंधी हूटर/सायरन तथा बचाव हेतु एरेस्टर लगाये जाने जाने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया।

मा. सदस्य द्वारा जिले को निदेशित किया गया कि मानसून से पूर्व कार्य योजना से संबंधित सभी गतिविधियों का क्रियान्वयन किया जाए। इससे संबंधित गतिविधियाँ 01 मई, 2022 से शुरू करने का निदेश दिया गया। श्री नीरज कुमार सिंह, सीनियर कन्सल्टेन्ट द्वारा बिहार में वज्रपात/ठनका से प्रभावित जिलों एवं मृत्यु संबंधी प्रतिवेदन (वर्ष 2020 एवं 2021) के अध्ययन संबंधी रिर्पोट प्रस्तुत किया गया। प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार हैं:–

- वज्रपात से शहरी क्षेत्र की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र अधिक प्रभावित हो रहे हैं।
- किसान/कृषि मज़दूर/पशुपालन से जुड़े लोगों की अधिक संख्या में मृत्यु हो रही है।
- दोपहर 12:00 से सायं 06:00 के बीच वज्रपात से मृत्यु की घटनाएं अधिकत होती है।
- खुले स्थान/कृषि क्षेत्र में ज्यादातर मृत्यु हो रही है।

वज्रपात से सुरक्षा संबंधी कार्ययोजना के लिए बैठक

वज्रपात से जान माल की व्यापक क्षति होती है। वज्रपात की घटनाओं में मानव और पशु की मृत्यु हो जाती हैं, जो जीवित बच जाते हैं वे अपंगता का शिकार भी हो जाते हैं। ऐसे अपंगता के शिकार होने वालों में आँखों की रोशनी खत्म होने, सुनने की क्षमता खत्म होने या कम हो जाने की समस्या देखी जाती है।

वज्रपात की घटनाओं की रोकथाम के लिए विभिन्न संस्थाओं एवं विभागों बचाव के लिए की जाने वाली गतिविधियों तथा उत्तरदायित्व संबंधी क्रियान्वयन के लिए दिनांक 12.04.2022 को ज्ञान भवन, पटना में वज्रपात/ठनका से बचाव एवं रोकथाम संबंधी बैठक हुई। माननीय उपाध्यक्ष, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण डा॰ उदय कांत मिश्र की अध्यक्षता में हुई बैठक में वज्रपात से अति प्रभावित 15 जिलों के साथ बचाव एवं रोकथाम अध्ययन प्रतिवेदन एवं नयी कार्ययोजना पर विस्तार से विमर्श किया गया। कार्यक्रम में जागरुकता एवं पूर्व चेतावनी संबंधी हूटर, सायरन तथा बचाव हेतु एरेस्टर लगाये जाने आदि विषयों पर

विस्तार से चर्चा की गई। प्रथम चरण की कार्ययोजना में पटना, गया एवं औरंगाबाद जिलों में क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाना तय किया गया। माननीय सदस्य श्री॰ पी॰एन॰ राय, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा अवगत कराया गया कि वज्रपात से प्रभावित अति प्रभावित 15 जिलों में जागरूकता कार्यक्रम, नुक्कड़ नाटक एवं पूर्व चेतावनी संबंधी गतिविधियों का क्रियान्वयन किया जाये। वज्रपात/ठनका से बचाव एवं रोकथाम संबंधी सर्वाधिक प्रभावित तीन जिलों (पटना, गया और औरंगाबाद) के कार्ययोजना की गतिविधियों पर चर्चा की गयी।

बैठक में वज्रपात से संबंधित संकलित आंकडों के अनुसार 2020 में 443 एव 2021 में 276 लोगों की मृत्यु हुयी। वर्ष 2020 एवं 2021 में हुए इन घटनाओं के संबंध में प्राथमिक अध्ययन किया गया है। अध्ययन का निष्कर्ष इस प्रकार हैः–

- शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में वज्रपात से होने वाली मृत्यु अधिक हैं।
- वज्रपात के कारण मृत्यु मानसून के पूर्व एवं बाद में भी हो रही है।
- कृषि/ पशुपालन की गतिविधियों से जुड़े लोग अधिक प्रभावित होते हैं।

पटना में प्रदूषण (जल, मिट्टी और ध्वनी) की वर्तमान स्थिति के अध्ययन प्रतिवेदन पर हितधारकों की कार्यशाला

आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने पटना नगरीय क्षेत्र में प्रदूषण (जल, मिट्टी और ध्वनी) की वर्तमान स्थिति पर नीरी से अध्ययन कराया। नीरी के अध्ययन संबंधी अंतिम प्रतिवेदन एवं एम0आई0एस0 उपकरणों पर दिनांक दिनांक 11 अप्रैल 2022 को हितधारकों की परामर्शी कार्यशाला का अयोजन किया गया। कार्यशाला में पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, कृषि विभाग, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग, स्वास्थ्य विभाग, नगर विकास एवं आवास विभाग, जल संसाधन विभाग, बुडको, बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, मौसम विज्ञान विभाग, जनगणना ऑपरेशन एवं पटना नगर निगम के पदाधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में सीएसआईआर–नीरी के वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा जल, ध्वनी और मिट्टी की मौजूदा स्थिति, उनके लागत–लाभ विश्लेषण, मौसम संबंधी मापदंडों, जलवायु परिवर्तन और आजीविका के साथ एकीकरण और आपदा जोखिम में कमी के साथ शमन योजना पर प्रस्तुतीकरण दिया गया। कार्यशाला में विकसित की गई एम0आई0एस0 उपकरणों के माध्यम से डेटा निष्कर्ष और इसके सह–संबंध और विश्लेषण के लिए उपयोगकर्ता के अनुकूल दृष्टिकोण पर प्रस्तुतीकरण के माध्यम से जानकरी दी गई। सभी हितधारकों एवं समिति के अध्यक्ष ने नीरी द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन को स्वीकृत किया।

सांस्कृतिक धरोहरों की सुरक्षा के लिए पांच दिवसीय प्रशिक्षण

एनआईडीएम और बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के संयुक्त तत्वाधान में 'Preservation & Conservation of Cultural Heritage Sites and Precincts' from Disasters, विषय पर दिनांक 18–22 अप्रैल, 2022 तक पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का अयोजन किया गया। बिहार म्यूजियम में आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में राज्य के विभिन्न विभागों तथा जिलों से लगभग 90 पदाधिकारियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का आयोजन खासकर पटना में इसलिए किया गया कि बिहार में पुरातत्व के अनेकों घरोहर हैं जिनकी सुरक्षा विभिन्न आपदाओं से वांछनीय है। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय उपाध्यक्ष डा. उदय कांत मिश्र ने किया। उद्घाटन सत्र में श्री अंजनी कुमार सिंह, महानिदेशक, बिहार म्यूजियम, श्री पी.एन. राय, माननीय सदस्य, श्री मनीष कुमार वर्मा, माननीय सदस्य तथा विशिष्ट अतिथि प्रो. संतोष कुमार, एनआईडीएम की गरिमामयी उपस्थिति रही तथा उन्होंने अपने विचारों से सभी प्रशिक्षुओं को अवगत करया। उन्होंने बताया कि हमें अपने सांस्कृतिक घरोहरों की महत्ता की जानकारी होनी चाहिए तब ही इसका संरक्षण संभव हो सकेगा। बिहार के प्राचीन शहर पाटलिपुत्र, राजगीर, नालंदा पावापुरी, सासाराम समेत अन्य जिलों में अवस्थित घरोहरों का प्राकृतिक और मानव जनित आपदाओं से बचाव तभी संभव होगा जब विभिन्न हितभागियों के द्वारा समेकित प्रयास किए जाएंगे।

तय कार्यक्रम के अनुसार दिनांक 20.04.2022 को स्थानीय धराहरों की जानकारी के लिए भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के तहत प्रतिनिधियों ने श्री हरमंदिर साहिब, अगमकुआं, देवी स्थान और गोलघर का मुआयना व अध्ययन किया। पाँच समूहों में बंटकर प्रतिनिधियों ने आपदा प्रबंधन संबंधी विभिन्न विषयों पर सुरक्षा का आकलन किया एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतिम दिन प्रस्तुतिकरण के माध्यम से धराहरों की वर्तमान स्थिति और सुरक्षा के उपाय के बारे में विस्तार से बताया।

प्रतिभागियों के अध्ययन रिपोर्ट में यह स्पस्ट हुआ कि हमें अपने सांस्कृतिक तथा प्राचीन घरोहरों को आपदा से बचाना है। इसके बेहतर रखरखाव की जरूरत है ताकि ये मूल्यवान धरोहर हमेशा हमारे राज्य की गौरवशाली इतिहास को दर्शाते रहें।

Wetlands के संरक्षण लिए राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

UNEP तथा NIDM द्वारा आयोजित National Consultation workshop Upscaling community resilience through ecosystem-based disaster risk reduction विषय पर 26 अप्रैल, 2022 को अयोजित राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार में प्राधिकरण द्वारा इस क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों से प्रतिभागियों को अवगत कराया गया। बिहार में ECO DRR प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का अनुरोध किया गया ताकि Nature based solution for water meditated disaster पर व्यापक काम किया जा सके। Wetland Conservation पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। चूंकि बिहार के बेगूसराय जिला में एक Kabartal Wetland Ramsar Conservation site है। इसके संरक्षण के साथ–साथ बिहार के अन्य Wetlands के संरक्षण के लिए कार्य करना भी आवश्यक है। यह इसलिए आवश्यक है कि बिहार के लगभग 50 प्रतिशत Wetlands विलुप्त हो चुके हैं। इसके संरक्षण हेतु जल–जीवन–हरियाली कार्यक्रम तथा वनीकरण के लिए 'अकिरा मियावाकी' तकनीक का व्यापक उपयोग राज्य में किया जा रहा है।

"सुरक्षित तैराकी" प्रशिक्षण

राज्य में डूबने से होने वाली मौतों की रोकथाम एवं उनमे कमी लाने के लिए लगातार सुरक्षित तैराकी प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इससे आने वाले दिनों में ऐसी धटनाओं में कमी लाना संभव हो सकेगा। नियमित रूप से चल रहे प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत अप्रैल, 2022 में पटना जिले के दानापुर प्रखण्ड एवं वैशाली जिले के महनार प्रखण्ड में 06 से 18 आयु वर्ग के बालक/बालिकाओं का 12 दिवसीय प्रशिक्षण प्रारंभ किया गया। इस प्रशिक्षण में सुरक्षित तैराकी कार्यक्रम के अंतर्गत जीवन रक्षा एवं कौशल विकास का प्रशिक्षण दिया गया।

क्र0सं0	जिला का नाम	प्रखण्ड	प्रशिक्षण की तिथि (अप्रैल 2022)	बैचों की संख्या	सफलता पूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले बालकों/बालिकाओं एवं छात्रों, छात्राओं की संख्या (निम्नलिखित प्रखंडों के अंचलाधिकारियों/ बलदेव इन्टर विद्यालय के नोडल शिक्षक से दूरभाष से प्राप्त सूचना के अनुसार)
1	पटना	दानापुर (बालदेव इंटर विद्यालय के सहयोग से)	11 से 22 अप्रैल 2022	01 (छात्र)	24
				01 (छात्रा)	28
2	वैशाली	महनार	16 -27 अप्रैल 2022	02 (बालक)	58
				कुल	110

"सुरक्षित तैराकी" के लिए मास्टर ट्रेनर का प्रशिक्षण

डूबने से होने वाली मृत्यु की रोकथाम के उद्देश्य से ''सुरक्षित तैराकी'' कार्यक्रम के तहत विभिन्न अंचलों के गाँवों के चयनित युवक/युवतियों के लिए मास्टर ट्रेनर का प्रशिक्षण कार्यक्रम पुनः शुरू किया गया है।

8वें बैच में दिनांक 04.04.2022 से 12.04.2022 तक गया जिले (टनकुप्पा, फतेहपुर एवं वजीरगंज प्रखण्ड) के 20 प्रशिक्षुओं को मास्टर ट्रेनर के 9 दिवसीय मॉड्यूल के अनुसार प्रशिक्षण दिया गया।

9वें बैच में दिनांक 21.04.2022 से 29.04.2022 तक बांका जिले के बांका, बेलहर, चांदन, फुल्लीडुमर एवं कटोरिया प्रखण्डों के 16 और गोपालगंज जिले के विजयीपुर व थावे प्रखण्ड़ के 11 प्रशिक्षुओं ने सफलता पूर्वक 9 दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस प्रकार (16+11) कुल 27 प्रशिक्षुओं ने अर्हता जांच में सफलता पूर्वक मास्टर ट्रेनर का प्रशिक्षण पूरा किया।

अप्रैल 2022 माह का प्रशिक्षण का विवरण इस प्रकार हैः-

बैच सं0	तिथि	जिला	प्रखण्ड	स्थान	कुल प्रशिक्षित प्रशिक्षु पुरूष	
1	04.04.2022 से 12.04.2022	गया	टनकुप्पा, फतेहपुर एवं वजीरगंज	NINI	मास्टर ट्रेनर्र प्रशिक्षित प्रशिक्षु	19
					तैराकी प्रशिक्षित प्रशिक्षु	01
2	21.04.2022 से 29.04.2022	बांका	बांका, बेलहर, चांदन, फुल्लीडुमर एवं कटोरिया	NINI	मास्टर ट्रेनर्स प्रशिक्षित प्रशिक्षु	16
		गोपालगंज	विजयीपुर एवं थावे		मास्टर ट्रेनर्स प्रशिक्षित प्रशिक्षु	11
					कुल	**46**

इस प्रकार अप्रैल माह 2022 तक कुल 09 बैचों में पटना, वैशाली, खगड़िया, बेगूसराय भोजपुर, गया, बांका एवं गोपालगंज जिलों के कुल 117 + 46 = 163 युवकों एवं 9 + 15 = 24 युवतियों को मास्टर ट्रेनर तथा कुल 25 युवतियों एवं 06 +1 = 07 युवकों को तैराकी का प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

"जिला स्तरीय सड़क सुरक्षा" कार्यक्रम

सड़क दुघटनाओं में कमी लाने के लिए बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा विभिन्न हितभागियों के साथ सड़क सुरक्षा के लिए जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन 30 नवम्बर, 2019 से प्रारंभ है। अब तक राज्य के 50 स्कूलों में यह कार्यक्रम आयोजित हो चुके हैं। अप्रैल, 2022 में पटना और जहानाबाद में सड़क सुरक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें यहां के चार स्कूलों के 300 छात्रों/शिक्षकों ने भाग लिया। इस प्रकार अब तक इस कार्यक्रम में लगभग 4850 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

क्र0सं0	दिनांक	विद्यालय का नाम
1	08.04.2022	इंटर हाई स्कूल, लखावर, घोषी, जहानाबाद
		+2 राजकीय उच्च विद्यालय, घोषी, जहानाबाद
2.	22.04.2022	प्रेमालोक मिशन स्कूल, बैरिया, पटना।
		विद्या निकेतन गर्ल्स हाई स्कूल, बैरिया, पटना।

अग्नि सुरक्षा सप्ताह (14-20 अप्रैल, 2022)

राज्य में अगलगी की घटनाओं मे कमी एवं इससे ससमय निपटने के लिए के साथ–साथ समुदायों के क्षमतावर्द्धन के लिए अग्निसुरक्षा सप्ताह का आयोजन किया गया। दिनांक 14 से 20 अप्रैल 2022 तक आयोजित अग्नि सुरक्षा सप्ताह में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित हुए। सुरक्षा सप्ताह के दौरान स्लम बस्तियों के प्रतिनिधियों के साथ अग्नि सुरक्षा विषय पर संवाद कार्यक्रम आयोजित हुए वही शहरी क्षेत्र के विभिन्न सार्वजनिक स्थलों पर होर्डिंग एवं नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जन जागरूकता के कार्यक्रम आयोजित किए गये। अखवारों में एडवाइजरी का प्रकाशन किया गया। स्थानीय FM रेडियो/टी. वी. के माध्यम से जानकारी का प्रसारण किया गया। इस आयोजन में अग्निशमन सेवाएं समेत अन्य हितधारकों की भागीदारी और सहयोग मिले। अग्नि सुरक्षा सप्ताह के दौरान प्रति दिन झुग्गी–झोपड़ी/स्लम बस्तियों के प्रतिनिधियों के साथ जागरूकता संवाद, अग्नि सुरक्षा से संबंधित वीडियो का प्रसारण आदि जन–जागरूकता के कार्यक्रम किये गये। इन स्लम बस्तियों में लोहानीपुर, यारपुर मुसहरी, कौशल नगर, कमला नेहरू नगर, यारपुर डोमखाना और आर ब्लॉक रोड नं. 10 शामिल हैं। बैरिया बस स्टैंड, महावीर आरोग्य कैंसर संस्थान, जी.बी. मॉल, बोरिंग रोड, महावीर मंदिर, तिरूअनंतपुरम सिटी, खगौल रोड और डी.ए.वी. स्कूल, शास्त्रीनगर में फायर आडिट, मॉकड्रिल एवं नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया। सांस्कृतिक संस्था आपसदारी कला मंच के सहयोग से नुक्कड़ नाटक का मंचन किया गया।

सामुदायिक स्वयंसेवकों का प्रशिक्षण

बिहार बहु–आपदा प्रवण राज्य है। फलतः हमारे गाँवों पंचायतों, प्रखण्डों एवं जिलों में विभिन्न तरह की आपदाएं आती रहती हैं। इससे जानमाल की बड़ी क्षति होती है। ऐसे आपदाओं की क्षति को रोकने के लिए स्थानीय स्तर पर युवाओं को प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। पंचायतों में कुछ नौजवान आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन हेतु जरूरी ज्ञान और हुनर सीख लें तो वे अपने गाँव, पंचायत, प्रखंड एवं जिले को आपदाओं से सुरक्षित रखने अपनी भूमिका निभा सकेते हैं। इसी उद्देश्य से बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा नौजवानों/नवयुवतियों को प्रशिक्षित कर आपदाओं के प्रत्युत्तर के लिए तैयार रहा है ताकि आपदाओं से सुरक्षा प्रदान करने में वे अपने समुदाय के लिए मददगार बन सकें। साथ हीं वे अपने गाँव, पंचायत, प्रखंड एवं जिला स्तर पर विभिन्न आपदाओं की प्रवणता की जानकारी प्राप्त कर आपदाओं के जोखिम–न्यूनीकरण तथा प्रबंधन में सहायता कर सकेंगे। अप्रैल 2022 में दिनांक 01.04.2022 से 12.04.2022 तक प0 चम्पारण के कुल 45 स्वयंसेवकों को 12 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षित किया गया है। इस प्रकार अब तक पूर्णिया, मुजफ्फरपुर एवं प0 चम्पारण जिले के कुल 384 स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है।

पंचायत संसाधन केन्द्र के पदाधिकारियों का "आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन" का मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण

पंचायत संसाधन केन्द्र (DPRC) के पदाधिकारियों का "आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन" विषय पर दो दिवसीय मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पाँच बैचों में 5–6 अप्रैल, 7–8 अप्रैल, 12–13 अप्रैल, 19–20 अप्रैल एवं 21–22 अप्रैल, 2022 को आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिला परियोजना प्रबंधक, जिला जल स्वच्छता समन्वयक, जिला वित्त प्रबंधक, जिला सामाजिक विकास समन्वयक, जिला अनुश्रवण एवं मूल्यांकन समन्वयक, जिला पंचायत वित्त समन्वयक, प्रखण्ड परियोजना प्रबंधक, ब्लॉक फेसिलिटेटर एवं प्रखण्ड लेखा प्रबंधक शामिल हुए। इन प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर के माध्यम से पंचायती राज विभाग द्वारा आयोजित प्रखण्डस्तरीय प्रशिक्षण में सभी जनप्रतिनिधियों को जागरूक करना है ताकि किसी भी आपदा के समय वे अपने पंचायत को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

माह अप्रैल 2022 तक आयोजित प्रशिक्षण में में कुल 171 मास्टर ट्रेनर को प्रशिक्षित किया गया है। इस प्रकार अब तक 52+119= 171 मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षित किए जा चुके हैं।

क्र0सं0	दिनांक	प्रतिभागी जिला	प्रतिभागियों की संख्या
1	23–24 फरवरी, 2022	पटना, वैशाली, भोजपुर एवं नालंदा	25
2	14–15 मार्च, 2022	नवादा, गया, जहानाबाद, सुपौल, किशनगंज, शिवहर, कटिहार, मुंगेर, सिवान, शेखपुरा, औरंगाबाद, मधेपुरा, बांका, सारण, पूर्णिया, अररिया, जमुई, खगड़िया, लखीसराय, सहरसा, बेगूसराय, मुजफ्फरपुर, अरवल, वैशाली, कैमूर, पटना एवं बक्सर	27
3	5–6 अप्रैल, 2022	रोहतास, कैमूर (भभुआ), पटना, वैशाली, भागलपुर, समस्तीपुर, बांका, औरंगाबाद, बेगूसराय, सीतामढ़ी, मधुबनी, गोपालगंज, प0 चम्पारण, बक्सर, दरभंगा, गया एवं मुंगेर	26
4	7–8 अप्रैल, 2022	खगड़िया, जमूई, औरंगाबाद, गया, बेगूसराय, दरभंगा, मधेपुरा, मुंगेर, भागलपुर, पूर्णिया, कटिहार, मुजफ्फरपुर, पूर्वी चम्पारण,	23

		मधुबनी, अरवल, पटना एवं लखीसराय	
5	12–13 अप्रैल, 2022	समस्तीपुर, सुपौल, लखीसराय, पूर्णिया, कटिहार, खगड़िया, मुजफ्फरपुर, सिवान, रोहतास, सीतामढ़ी, मधेपुरा, बांका, सारण, पटना, पूर्णिया, शेखपुरा, औरंगाबाद, नवादा, गया, सहरसा, अररिया एवं शिवहर	24
6	19–20 अप्रैल, 2022	शेखपुरा, पटना, मुजफ्फरपुर, मधेपुरा, अरवल, भागलपुर, सुपौल, अररिया, गया, औरंगाबाद, पश्चिम चम्पारण, सारण, खगड़िया, लखीसराय, बेगूसराय, सहरसा, समस्तीपुर, पूर्वी चम्पारण, रोहतास, जमुई एवं जहानाबाद	24
7	21–22 अप्रैल, 2022	किशनगंज, रोहतास, कटिहार, पूर्णिया, लखीसराय, प0 चम्पारण, पूर्वी चम्पारण, सुपौल, मधुबनी, जहानाबाद, औरंगाबाद, अरवल, पटना, भागलपुर, खगड़िया, मुंगेर, बांका, गया एवं जमुई	22
		कुल	171

औद्योगिक इकाइयों में सुरक्षा के लिए समीक्षा बैठक

बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बेला स्थित नुडल्स फैक्ट्री में Boiler फटने की घटना के बाद प्राधिकरण स्तर से जांच के लिए कमिटी की अनुशंसाओं को संबंधित विभागों को भेजतें हुए उचित कार्रवाई का निर्देश दिया गया। अनुशंसाओं पर किए गये कार्य एवं भविष्य की रूप–रेखा तय करने के लिए 01.04.2022 को प्राधिकरण सभागार में बैठक हुई। बैठक में संबंधित विभागों के पदाधिकारी उपस्थित हुए। इस बैठक में दुर्घटना को रोकने के लिए आवश्यक कार्रवाई के बारे में विस्तार से चर्चा हुइ। बैठक में Hazardous एवं Non-Hazardous इकाइयों के वर्गीकरण की समीक्षा, Hazardous इकाइयों की Third PartyAudit, Boiler Operators के ट्रेनिंग/Capacity Building, Hazardous इकाइयों में मॉकड्रिल आदि कार्य करने का निर्देश दिया गया।

बिहार दिवस के अवसर पर बेहतर कार्य करने वाले संस्थाओं को किया गया सम्मानित

बिहार दिवस 22–24 मार्च 2022 के अवसर पर आपदा प्रबंधन के लिए जागरूकता संबंधी बेहतर कार्य करने वाले संस्थाओं को सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वाले संस्थाओं में प्राधिकरण पेवेलियन के चार स्टॉल का चयन किया गया। ये सभी चार स्टॉल एन.जी.ओ. श्रेणी के हैं। सम्मानित होने वाले स्टॉलों में पहला स्थान 'सेव द चिल्ड्रेन', दूसरा स्थान 'रेडक्रॉस' और तीसरे स्थान पर घोघरडीहा प्रखण्ड विकास स्वराज, मधुबनी व 'उत्कर्ष एक पहल' शामिल हैं। इन संस्थाओं को 28 अप्रैल को प्राधिकरण सभागार में आयोजित समारोह में सम्मान पत्र एवं प्लांट बूके देकर सम्मानित किया गया।

सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए बिहार राज्य आपदा प्रबधंन प्राधिकरण के माननीय उपाध्यक्ष डॉ. उदय कान्त मिश्र ने चयनित संस्थाओं के प्रतिनिधियों को बधाई दिया। उन्होंने कहा कि बिहार दिवस के अवसर पर प्राधिकरण पेवेलियन के सभी स्टॉलों के द्वारा जनजागरूकता के लिए बेहतरीन कार्य किया गया। उपाध्यक्ष महोदय ने कहा कि आप सभी के सहयोग से हीं यह बेहतर कार्य सम्पन्न हो सका है। आपसबों का काम इतना बेहतर था कि सर्वश्रेष्ठ स्टॉल का चयन करना मुश्किल हो रहा था। सभी सटॉलों पर जागरूकता के लिए एक से बढ़कर एक कार्यक्रम हुए। उन्होंने चयनित सभी संस्थाओं के प्रतिनिधियों को आपदा प्रबंधन के लिए लगातार काम करते रहने का अनुरोध किया। प्राधिकरण के माननीय सदस्य श्री पी0 एन0 राय ने सभी संस्थाओं को काम काज की सराहना करते हुए भविष्य में इसे जारी रखने का अनुरोध किया। चारों संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भी सम्मान समारोह के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए प्राधिकरण को धन्यवाद दिया। विदित हो कि बिहार दिवस के मौके पर प्राधिकरण पेवेलियन में कुल 36 स्टॉल स्थापित हुए थे। सभी स्टॉलों पर जनजागरूकता के लिए चले कार्यक्रमों को लगभग 50 हजार से अधिक लोगों ने देखा। इस दौरान दर्शकों को आपदा प्रबंधन से संबंधित आई.ई.सी. मेटेरियल दिया गया ताकि वे आपदा से बचाव की जानकारी अपने परिवार और आस प्रास के लागों तक पहुंचा सकें।

सोनपुर मेला, 2022 के आयोजन की पूर्व तैयारी बैठक

सोनपुर मेला, 2022 के आयोजन की तैयारी के लिए प्राधिकरण सभागार में बैठक हुई। 28.04.2022 को आयोजित इस बैठक में प्राधिकरण द्वारा लगाये जाने वाले पेवेलियन एवं जनजागरूकता कार्यक्रमों समेत अन्य बिन्दुओं पर विमर्श किया गया। माननीय उपाध्यक्ष, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण डॉ0 उदय कान्त मिश्र के अध्यक्षता एवं माननीय सदस्य श्री पी0 एन0 राय की मौजुदगी में बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में आपदा से बचाव के लिए विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन की जिम्मेवारी निर्धारण किया गया। एक संचालन समिति का गठन किया गया। समिति समय–समय पर बैठक आयोजित कर कार्यक्रमों का निर्धारण करेगी।

सड़क सुरक्षा के मानक संचालन प्रक्रिया के लिए प्रारूपण समिति की बैठक

सड़क दुर्घटनाओं के पूर्व एवं दुर्घटनाओं के पश्चात त्वरित कार्रवाई के लिए मानक संचालक प्रक्रिया (SOP) तैयार करने के लिए दिनांक 26.04.2022 को प्रारूपण समिति की बैठक हुई। बैठक नरेन्द्र कुमार, विंग कमांडर (Rtd.) अध्यक्ष, सड़क सुरक्षा समिति, BSDMA की अध्यक्षता में हुई। बैठक में SOP में शामिल किए जाने वाले विभिन्न अध्यायों पर विस्तार से चर्चा हुई। प्रथम ड्राफ्ट मई माह के दूसरे सप्ताह तक तैयार कर लेने का निर्णय लिया गया।

मोटर पार्ट्स दुकानों में सड़क सुरक्षा संबंधी प्रचार सामग्री का वितरण

दिनांक 22.04.2022 को प्राधिकरण द्वारा आयोजित सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम के तहत राजधानी पटना के भट्टाचार्य रोड में 12 ऑटो पार्ट्स के दुकानदारों में सड़क सुरक्षा से संबंधित प्रचार–प्रसार सामग्रियों का वितरण किया गया। दुकानदारों से अनुरोध भी किया गया कि प्रचार–प्रसार सामग्रियां आने वाले ग्राहकों के बीच वितरण करें ताकि दूकानदार इस जागरूकता सामग्री को आमलोगों तक पहुंचा सकें। इससे सड़क सुरक्षा अभियान को आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी। दुकानदारों को सम्पर्क नम्बर भी दिया गया कि सामग्रियों की और आवश्यकता पड़ने पर प्राधिकरण से संपर्क कर सकें।

भूकम्परोधी निर्माण तकनीक का प्रशिक्षण

19740 राजमिस्त्रियों एवं 2676 अभियंताओं को मिला भूकंपरोधी निर्माण एवं रेट्रोफिटिंग का प्रशिक्षण

भूकम्परोधी भवन निर्माण तकनीक की जानकारी देने के लिए अनुभवी राजमिस्त्रियों को सात दिवसीय प्रशिक्षण के दूसरे बैच का प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ। अप्रैल, 2022 में 835 राजमिस्त्रियों को प्रशिक्षित किया गया। इस प्रकार (मार्च, 2022 तक 18905 राज्यमिस्त्रियों एवं 2676 असैनिक अभियंताओं और 835 राजमिस्त्रियों) 19740 राजमिस्त्रियों एवं 2676 असैनिक अभियंताओं को भूकंपरोधी निर्माण एवं रेट्रोफिटिंग की जानकारी दी गयी। अप्रैल, 2022 में 565 राज्यमिस्त्रियों को प्रशिक्षित किया गया। इस प्रकार अप्रैल, 2022 तक 19740 राज्यमिस्त्रियों एवं अनुभवी 2676 असैनिक अभियंताओं को भवनों के भूकम्परोधी निर्माण एवं रेट्रोफिटिंग तकनीक विषय पर प्रशिक्षित किया जा चुका है।

1. दिनांक 18 अप्रैल, 2022 को राजमिस्त्रियों के 20–26 अप्रैल तक आयोजित प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षकों/भावी प्रशिक्षकों के कुल 35 अभियंताओं/राजमिस्त्रियों का एक दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स प्राधिकरण के सभा कक्ष में संपन्न किया गया।
2. दिनांक 19 अप्रैल, 2022 को राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन के वरीय पदाधिकारियों द्वारा राजमिस्त्री प्रशिक्षण कार्यक्रम के सम्बन्ध में प्राधिकरण के सभाकक्ष में एक प्रस्तुतीकरण दिया गया जिसका अवलोकन मा० उपाध्यक्ष एवं मा० सदस्य द्वय द्वारा किया गया एवं सुसंगत सुझाव/निदेश दिये गये। कार्यक्रम को NSDC एवं BSDMA द्वारा संयुक्त रूप से संचालित

करने एवं दोनों संस्थानों के हस्ताक्षर से प्रमाण पत्र निर्गत करने से संबंधित कार्य योजना पर प्रस्तुतीकरण दिया गया।

3. दिनांक 20 से 26 अप्रैल 2022 तक समस्तीपुर जिला के सभी 20 प्रखंडों में प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे बैच में **कुल 565** राजमिस्त्रियों को भूकम्परोधी भवन निर्माण के लिए सात दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया।

(i) राजमिस्त्री प्रशिक्षण के अन्तिम दिन (26 अप्रैल, 2022) प्रत्येक प्रखंड में लगभग 30 गृहस्वामियों, निर्माण सामग्री के व्यवसायियों एवं अन्य प्रभावशाली लोगाों को जागरूक किया गया।

(ii) राजमिस्त्री प्रशिक्षण के अंतिम दिन उन्हें मेसन टूल किट एवं सेफ्टी हेलमेट प्रदान किया गया।

(iii) श्रम संसाधन विभाग के द्वारा प्रखंड में जाकर राजमिस्त्रियों का श्रम निबन्धन कराया गया।

4. भवनों का R.V.S. (Rapid Visual Screening) कराने के संबंध में आई.आई.टी., पटना के साथ MOU पर हस्ताक्षर किया गया। Pilot study के तहत निम्नलिखित भवनों का चयन किया गया।

i. डा0 भीमराव अम्बेदकर कल्याण छात्रावास, मगध महिला महाविद्यालय, पटना,

ii. डा0 भीमराव अम्बेदकर कल्याण छात्रावास, महेन्द्रू, पटना,

iii. आयुक्त कार्यालय भवन, मुजफ्फरपुर,

iv. समाहरणालय भवन, पूर्वी चम्पारण

v. समाहरणालय भवन, दरभंगा का प्राधिकरण के स्तर पर चयन कर IIT को सूचित किया गया।

IIT द्वारा इन भवनों का निरीक्षण एवं नमूना संग्रह का कार्य किया गया। मगध महिला महाविद्यालय के प्राचार्य एवं संबंधित जिलों के अपर समाहर्ता एवं आयुक्त के सचिव के साथ आवश्यक समन्वय कर IIT पटना को आवश्यक सहयोग प्रदान किया गया। IIT द्वारा इस संबंध में अग्रेतर अध्ययन किया जा रहा है।

5. Shake Table का निर्माण कार्य प्रगति पर है। NIT रायपुर के प्रो० गोवर्द्धन भट्ट से लगातार सम्पर्क एवं समन्वय किया जा रहा है। उनके द्वारा माह जून तक इसे पूरा कर लेने का आश्वासन दिया गया है।

6. राजकीय पॉलिटेक्निक, दरभंगा में निर्माणाधीन भूकम्प सुरक्षा क्लीनिक सह परामर्श केन्द्र के निर्माण से सम्बन्धित कार्य का अनुश्रवण किया गया। प्रभारी प्राध्यापक ने बताया है कि यह कार्य माह मई के अन्त तक पूर्ण होना सम्भावित है।

7. बिहार भूकम्प दूरमापी तंत्र से सम्बन्धित केन्द्रीय संग्रहण स्टेशन भवन एवं फील्ड स्टेशन के निर्माण कार्य तथा हस्तांतरण हेतु आवश्यक कारवाई की गई। भवन निर्माण निगम लि० के पदाधिकारियों के साथ प्राधिकरण के सभाकक्ष में माननीय उपाध्यक्ष की अध्यक्षता में बैठक हुई एवं सुसंगत निर्णय लिये गये।

8. बिहार भूकम्प आपदा प्रबंधन मार्गदर्शिका के गठन के संबंध में ड्राफ्टिंग कमिटी के सदस्यों एवं अन्य विशेषज्ञों के साथ समन्वय के कार्य किये जा रहे हैं। विशेषज्ञों से प्राप्त मंतव्य को ड्राफ्टिंग कमिटि के सदस्यद्वय प्रो0 अतुल आदित्य पांडेय एवं प्रो0 वैभव सिंघल को अग्रेत्तर कार्रवाई हेतु माह मई में भेज दिया जाएगा।

अस्पताल अग्नि सुरक्षा कार्यक्रम

'अस्पताल अग्नि सुरक्षा कार्यक्रम' के तहत' 16 बिंदु अग्नि प्रवणता सूचकांक' के आधार पर अप्रैल, 2022 में राज्य के कुल 257 अस्पतालों का निरीक्षण किया गया जिसमें 57 सरकारी एवं 200 निजी अस्पताल शामिल हैं। इन अस्पतालों का निरीक्षण प्राधिकरण के दिशा निर्देश में अग्निशाम सेवाएं के अधिकारियों द्वारा किया गया है। इस प्रकार अब राज्य में (मार्च, 2022 तक 4235+ अप्रैल 2022 में 297) कुल 4,492 अस्पतालों का अग्नि प्रवणता सूचकांक के आधार पर निरीक्षण किया जा चुका है। ब्यौरा इस प्रकार है:–

माह अप्रैल 2022 में अस्पतालों/नर्सिंग होमस् के भवनों में फायर ऑडिट का ऑकड़ा।

क्र0स0	जिला का नाम	कोविड अस्पताल			नन कोविड अस्पताल		
		सरकारी	निजी अस्पताल	कुल	सरकारी	निजी अस्पताल	कुल
1	पटना	0	0	0	1	22	23
2	नालंदा	0	1	1	1	3	4
3	रोहतास	0	0	0	0	8	8
4	भभुआ	0	0	0	0	0	0
5	भोजपुर	1	0	1	0	0	0
6	बक्सर	1	1	2	0	1	1
7	गया	0	0	0	2	0	2
8	जहानाबाद	0	0	0	0	2	2
9	अरवल	0	0	0	0	2	2
10	नवादा	0	0	0	0	0	0
11	औरंगाबाद	0	0	0	1	1	2
12	छपरा	1	0	1	0	0	0
13	सिवान	0	0	0	1	2	3
14	गोपालगंज	0	0	0	3	0	3
15	मुजफ्फरपुर	0	0	0	0	14	14
16	सीतामढी	Nill 0	0	0	0	0	0
17	शिवहर	0	0	0	0	0	0
18	बेतिया	0	0	0	0	2	2
19	बगहा	0	0	0	1	1	2
20	मोतिहारी	2	2	4	7	25	32
21	वैशाली	0	2	2	0	11	11
22	दरभंगा	0	0	0	3	15	18
23	मधुबनी	0	0	0	1	9	10
24	समस्तीपुर	0	0	0	0	4	4
25	सहरसा	0	0	0	1	2	3
26	सुपौल	0	0	0	1	5	6
27	मधेपुरा	1	0	1	1	2	3
28	पूर्णिया	Nill 0	0	0	0	0	0
29	अररिया	0	0	0	1	1	2
30	किशनगंज	0	0	0	0	1	1
31	कटिहार	0	0	0	2	7	9
32	भागलपुर	2	3	5	0	10	10
33	नवगछिया	0	0	0	1	2	3
34	बाँका	0	0	0	2	1	3
35	मुंगेर	0	0	0	0	0	0
36	लखीसराय	0	0	0	5	0	5
37	शेखपुरा	0	0	0	0	1	1
38	जमुई	0	0	0	0	0	0
39	खगड़िया	1	1	2	10	31	41
40	बेगुसराय	2	1	3	1	4	5
	कुल योग	11	11	22	46	189	235

Mass Messaging

प्राधिकरण में उपलब्ध विभिन्न मोबाइल नंबर जैसे जिला पदाधिकारी DM (38), ADM (38), BDO (534), CO (534), साथ ही साथ प्रशिक्षित फोकल टीचर (1542), नाव एवं नाव मालिक (3820), पंचायत जनप्रतिनिधि (**चयनित–207429**, गैर चयनित–**435699**), जीविका दीदी– **(148890)**, आशा कार्यकर्ता **(77542)**, आगनबाड़ी सेविका **(45946)** एवं प्राधिकरण द्वारा प्रशिक्षित अभियंताओं एवं राजमिस्त्रियों समेत अन्य लगभग 36 लाख नंबर पर सामूहिक संदेश संप्रेषण (मैसेजिंग) नियमित रूप से किये जाते हैं। मार्च 2022 में कुल **845012** मास मैसेजिंग किया गया, जिसमें जीविका दीदी, आशा, जिला परिषद्, सी0ओ0, डी0एम0 और आपदा प्रबंधन विभाग के कर्मियों, प्रशिक्षित मुखिया, सरपंच एवं आई0सी0डी0एस0 के लाभार्थी शामिल हैं।

(अप्रैल का प्रतिवेदन 10 से 15 मई तक प्राप्त होगा।)

गर्म हवाएं/लू से सुरक्षा के उपाय निम्न है

जब भी बाहर धूप में जायें

जितनी बार हो सके पानी पिएं, बार–बार पानी पिएं, सफर में अपने साथ पीने का पानी हमेशा रखें।

यथा संभव हल्के रंग के, ढीले–ढाले एवं सूती कपड़े पहनें।

धूप के चश्मे का इस्तेमाल करें, गमछा या टोपी से अपने सिर को ढकें व हमेशा जूता या चप्पल पहनें।

हल्का भोजन करें, अधिक पानी की मात्रा वाले मौसमी फल जैसे– तरबूज, खीरा, ककड़ी, खरबूजा, संतरा आदि का अधिकाधिक सेवन करें।

जानवरों को छाँव में रखें एवं उन्हें भी खूब पानी पीने को दें।

अगर तबियत ठीक न लगे या चक्कर आये जो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

आपदा नहीं हो भारी,

यदि पूरी हो तैयारी।

खबरें तस्वीरों में

औद्योगिक इकाइयों में सुरक्षा विषय पर विमर्श

कम्यूनिटी वॉलेंटियर ट्रेनिंग का एक दृश्य

अग्नि सुरक्षा सप्ताहः नुक्कड़ नाटक देखते दर्शक

सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रमः मोटर पार्ट्स दुकानों में पंपलेट का वितरण

राष्ट्रीय कौशल विकास निगम के अधिकारी प्राधिकरण कार्यालय में

पंचायती राज पदाधिकारियों का दो दिवसीय मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण

राजमिस्त्रियों के प्रशिक्षण का दृश्य

भूकंपरोधी भवन निर्माण के लिए प्रशिक्षण लेते राजमिस्त्री

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

(आपदा प्रबंधन विभाग, बिहार सरकार)

बिहार सरकार